Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July- December- 2022 3(2), 640–650

भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध धर्मरू इतिहास और पुरात्तत्व के सन्दर्भ में विश्लेषण

Dr. Ishwar Daan [1], Dr. Pallavi Prasad [2]

[1] Assistant Professor, Department of History, Satyawati College, University of Delhi, India
[2] Professor, Department of History, Satyawati College, University of Delhi

ब्वततमेचवदकपदह ।नजीवत
डॉ॰ ईश्वर दानए

क्व
10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.2464

थ्नदकपदहरू जीपे तमेमंतबी तमबमपअमक दव`चमबपपिब हतंदज तिवउ ंदल निदकपदह ंहमदबल पद जीम चनइसपबए बवउउमतबपंसए वत दवज.वित.चतवपिज `मबजवतेण

ब्वचलतपहीजरू ौ 2022 जीम ।नजीवते;द्धण जीपे ूवता पे सपबमदेमक नदकमत ंब्तमंजपअम ब्वउउवदे ।जजतपइनजपवद 4ण0 प्दजमतदंजपवदंस स्पबमदेमण

ॅपजी जीम सपबमदेम ब्ठल्ए ंनजीवते तमजंपद जीम बवचलतपहीजए ंससवूपदह ंदलवदम जव कवूदसवंकए तमनेमए तम.चतपदजए उवकपलिए कपेजतपइनजमए ंदकध्वत बवचल जीमपत बवदजतपइनजपवदण जीम ूवता उनेज इम चतवचमतसल ंजजतपइनजमक जव पजे ंनजीवतण

।ठैज्त्।ब्ज

यह लेख भारत में बौद्ध धर्म के प्रारंभिक विकास की पड़ताल करता हैए जिसमें प्राचीन स्तंभोंए स्तूपों और मूर्तियों सहित पुरातात्विक अध्ययन पर विशेष जोर दिया गया है। सिद्धार्थ गौतम या बुद्ध द्वारा स्थापित बौद्ध धर्मए छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उभरा और तेजी से पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैल गया। यह लेख इसकी सफलता के पीछे के कारकों की जांच करता हैए जैसे विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों के लिए इसकी अनुकूलनशीलताए शाही संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका . विशेष रूप से सम्राट अशोक द्वार और मठवासी समुदायों की स्थापना। स्तूपों और अन्य पुरातात्विक परिसरों के निर्माण ने भी धर्म के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्तए यह लेख गांधारए मथुरा और अमरावती स्कूलों जैसी कलात्मक परंपराओं के योगदान की पड़ताल करता हैए जिन्होंने बौद्ध कला और प्रतिमा विज्ञान को प्रभावित किया।
बौद्ध धर्म का उदय भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक परिवर्तनकारी अवधि का प्रतीक हैए जिसने भविष्य के धार्मिक आंदोलनों को प्रभावित किया और भारतीय और वैश्विक दार्शनिक विचार दोनों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। इसके अलावाए यह लेख बौद्ध वास्तुकला के विकास के महत्व और बौद्ध धर्म और अन्य समकालीन धार्मिक परंपराओंए जैसे जैन धर्म और प्रारंभिक हिंदू धर्म के बीच परस्पर संबंध पर प्रकाश डालता है। पुरातात्विक साक्ष्यों का विश्लेषण प्रारंभिक बौद्ध धर्म की मूर्त विरासत पर प्रकाश डाल ने का प्रयास किया हैए जो कलाए संस्कृति और धार्मिक प्रथाओं पर इसके स्थायी प्रभाव को दर्शाता है।ण

ज्ञमलूवतकेरू बौद्ध धर्मए पुरातत्व परिसरए गांधारए मथुराए कुषाणए अमरावतीण

1ण फ्छजत्त्वन्ब्ज्प्छ

छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारतीय इतिहास में गहन दार्शनिक और बौद्धिक प्रश्नों का काल था। राजनीतिकए सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकासों के अलावाए यह उत्तर भारत में प्रारंभिक ऐतिहासिक युग की शुरुआत का प्रतीक था। यह काल गंगा घाटी में राज्य निर्माण और शहरीकरण की प्रक्रिया का साक्षी बना। इस अवधि में बौद्ध तथा जैन ग्रंथों के अनुसार क्रमशरू 62 व 363 से अधिक नए धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। इस शताब्दी के सभी धार्मिक उपदेशकों में गौतम बुद्ध असाधारण रूप से प्रभावशाली थे और उनका सबसे व्यापक सामाजिक आधार था।

गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 586 ईप में लुम्बिनी नामक वन में सिद्धार्थ के रूप में शाक्य कुल के प्रमुख माया और सुद्धोदन के पुत्र के रूप हुआ जो की कपिलवस्तु के शासक थे। गौतम बुद्ध की जीवनी के अनुसार 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग कर 6 वर्षों तक सत्य की खोज में भटकते रहे। कठोर तपस्या करके उन्होंने वर्तमान बिहार के ‘गया’ नामक स्थान पर पीपल के वृक्ष नीचे बोधिसत्व को प्राप्त किया। इसलिए उन्हें बुद्धए अर्थात प्रबुद्ध व्यक्ति के नाम से जाना गया। बनारस के निकट सारनाथ नामक स्थान पर एक हिरण उद्यान में बुद्ध ने दुःख से मुक्ति पाने के विषय में अपना पहला उपदेश दिया। यह उनका पहला धम्म प्रवचन था। इस महान ज्ञानी ने विभिन्न दर्शनों से अंधे होकर भटक रहे लोगों को सच्चे धम्म का प्रकाश दिखाया। दुख के चक्र में उलझे लोगों के बीच बुद्ध ने धम्म चक्र प्रवर्तन किया और इसलिए इस प्रवचन को धम्म.चक्क.पवत्तन कहा जाता है। यह घटना बौद्ध धर्म के प्रचार का प्रारंभ मानी जाती है और इस उपदेश ने बौद्ध सिद्धांत का सार प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने उपदेशों को साधारण अनुयायियों अर्थात उपासकों के साथ.साथ अपने द्वारा स्थापित ‘संघ के भिक्षुओं को भी संबोधित किया। उन्होंने लगभग पैंतालीस वर्षों तक लोकप्रिय शहरों और नगरीय केंद्रों जैसे कौशाम्बीए राजगीरए गयाए पावा आदि में अपने धम्म पर उपदेश दिए।[प] बुद्ध के अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर में मृत्यु से पहलेए उनका सिद्धांत उत्तर भारत में समाज के विभिन्न वर्गों के बीच लोकप्रिय हो गया था।

बुद्ध के युग से लेकर मौर्य वंश के तीसरे सम्राट अशोक के सिंहासनारोहण तक की शताब्दियों के दौरान बौद्ध धर्म एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर चुका थाए जो समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। महापरिनिर्वाण सुत्त हमें बताता है कि बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अंतिम संस्कार की राख के ऊपर आठ स्तूपों का निर्माण किया गया और दो और स्तूप अंतिम संस्कार के बर्तन और चिता की राख के ऊपर बनाए गए। पिपरहवा और वैशाली के मिट्टी के स्तूप इन प्रारंभिक स्तूपों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।[पप] समय के साथ स्तूप बुद्ध के धम्म के प्रतीक के रूप में उभर कर सामने आए। 260 ईसा पूर्व में कलिंग युद्ध की हिंसा करने के बाद अशोक को पश्चाताप हुआ। कलिंग युद्ध के ढाई साल बाद वो बौद्ध धर्म का प्रबल समर्थक बन गया और युद्ध द्वारा विजय प्राप्त करने की नीति को छोड़ दी। बौद्ध परंपरा के अनुसारए अशोक ने 84ए000 स्तूपों और विहारों का निर्माण करायाए हालांकि यह संख्या अतिरंजित प्रतीत होती है। प्राचीन ग्रंथों से पता चलता हैं कि अशोक ने बुद्ध के अवशेषों का पुनर्निमाण किया और अपने साम्राज्य के सभी महत्वपूर्ण नगरों में स्तूपों के निर्माण का आदेश दिया। उनके शासनकाल के दौरान पुराने मिट्टी के स्तूपों को ईंटों से बड़ा किया गया। पिपरहवा और वैशाली के ईंट स्तूप तथा निगाली सागर शिला लेखए जो अशोक के शासनकाल के 14वें वर्ष में कनकमुनि स्तूप के आकार को दोगुना करने के बारे में जानकारी देता हैए इन निर्माण गतिविधियों की पर्याप्त गवाही देते हैं। सारनाथ के धर्मराजिका और धामेख स्तूपए राजगीर का ईंट स्तूपए तक्षशिला का धर्मराजिका स्तूप और अमरावती का स्तूप.मठ परिसर सभी अशोक के समय के लगते हैं।[पपप] सांची के सबसे बड़े स्तूपए अर्थात् स्तूप संख्या 1ए का ईंट का मुख्य ढांचा भी अशोक के शासनकाल में निर्मित हुआ था।

अशोक ने लघु शिलालेख 1 में बुद्ध की शिक्षाओं में अपने विश्वास की घोषणा की। उन्होंने अपने शासन के दसवें वर्ष में ;बोधगया‘ जैसे बौद्ध धर्म से संबंधित कई धार्मिक स्थलों का दौरा किया। लुंबिनीए जिसका उल्लेख रुम्मिनदेई शिलालेख में मिलता है। निगालीसागर स्तंभ लेख के अनुसार अपने शासन के 14वें वर्ष में और फिर 20वें वर्ष में बुद्ध कनकमुनि के स्तूप का दौरा कियाए और उपनिथ.विहार का दौराए जिसका उल्लेख पांगुरारिया के लघु शिलालेख में है। बौद्ध ग्रंथों के अनुसारए अशोक के शासनकाल के दौरान पाटलिपुत्र में मोग्गलिपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में तीसरी बौद्ध परिषद आयोजित की गई थी। पहली बौद्ध परिषद राजगीर में बुद्ध की मृत्यु के तुरंत बाद आयोजित की गई थीए जबकि दूसरी परिषद सौ वर्षों के बाद वैशाली में आयोजित की गई थी। महावंश में पता चलता है कि अशोक ने तीसरी परिषद के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में कई बौद्ध मिशन भेजे। मजीमाए कश्यपगोत्रए धुंडिबिस्सरए सहदेव और मूलकदेव को हिमालयी क्षेत्र में मिशनरी के रूप मेंए महारक्षित को उत्तर.पश्चिम मेंए मजीहंतिक को कश्मीर और गांधारए महादेव को मध्य भारत के महिषमंडल मेंए योना धर्मरक्षित को पश्चिमी मालवा के अपरांतक मेंए रक्षित को वनवासी मेंए महाधर्मरक्षित को पश्चिमी दक्कन के महारठ मेंए सोना और उत्तरा को सुवर्णभूमिए पेरहैप्स को म्यांमार ओर दक्षिण.पूर्व एशिया मेंए

तथा महिंद को श्रीलंका भेजा गया।[पअ] इस प्रकार अशोक ने भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर और संभवतः दक्षिण.पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म और उसके विचारों के प्रचारदृप्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत के बाहर बौद्ध धर्म के विस्तार का एक ओर व्यापक व महत्वपूर्ण चरण कुषाण साम्राज्य के समय पूरा हुआ। एक सशक्त राज्य की राजनीतिक स्थिरताए बढ़ते वाणिज्यिक और सांस्कृतिक संपर्कों के साथ एक ऐसा विश्वव्यापी वातावरण तैयार हुआ। जो बौद्ध कलाए वास्तुकला और धर्म के विकास के लिए अनुकूल था। समृद्ध पुरातात्विक सामग्रियों के अलावा तात्कालिक शिलालेख और सिक्के भी कुषाणों के शासन में बौद्ध धर्म की समृद्ध और विस्तार की पुष्टि करते हैं।

कनिष्क के शासनकाल के दौरानए चौथी बौद्ध परिषद के बाद हीनयान और महायान के बीच विभाजन औपचारिक रूप से स्थापित हुआ। कुषाण युग के दौरान महायान बौद्ध धर्म मध्य एशिया के माध्यम से चीन पहुंचा और इसके बाद जापान और कोरिया जैसे अन्य पूर्वी क्षेत्रों में फैल गया। दूसरी शताब्दी ईस्वी के अंत में कई महायान सूत्रों का चीनी भाषा में अनुवाद किया गया। इस अवधि के दौरान महायान दर्शन के दो प्रमुख विद्यालय उभरेरू नागार्जुन द्वारा प्रतिपादित ‘मध्यमक और मैत्रेयनाथ द्वारा स्थापित ‘योगाचार। स्थविरवादियों के अलावा हीनयान का एक और संप्रदाय ‘सर्वास्तिवाद भी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। उसे कनिष्क से संरक्षण मिला और उन्होंने मध्य एशियाए गांधार और कश्मीर में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। पुरातत्व ने कुषाण साम्राज्य के विशाल क्षेत्र में फैले बौद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियोंए विहारोंए स्तूपोंए चैत्य और स्तूप.मठ परिसरों के अवशेषों के रूप में कला और वास्तुकला के सुंदर नमूने प्राप्त किए हैं।

कुषाण शिलालेखों में अठारह विहारों और मठों का उल्लेख मिलता है।[अ] इनमें से कुछ शिलालेखों में विभिन्न भिक्षुओं और भिक्षुणियों और उनके शिक्षक के नाम भी दिए गए हैंए जिन्होंने न केवल खुद महंगे दान किएए बल्कि गृहस्थ उपासकों और पेशेवरों को भी विभिन्न पुण्य कार्यों के लिए प्रेरित किया। इस युग के सबसे प्रसिद्ध दाताओं में भिक्षु बाला और उसकी शिष्या भिक्षुणी बुद्धमित्रा थीए जिन्होंने कौशांबीए सारनाथ और श्रावस्ती में बोधिसत्व की मूर्तियों का निर्माण कराया। कई अभिलेखों में उल्लेख है कि धर्म. आदेशों के सम्मानित व्यक्तियों के अनुरोध पर गृहस्थ शिष्यों द्वारा दान किए गए थेए जिससे यह बात भी सामने आती है कि कुछ दानए जो भिक्षुओं या भिक्षुणियों द्वारा दिए गए थे वो उनके अमीर संरक्षकों से एकत्र की गई राशि हो सकती हैं।[अप] ये शिलालेख दिखाते हैं कि भिक्षुणियों ने धर्मनिरपेक्ष व्यक्तियों से दान एकत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बौद्ध भिक्षुणी बुद्धमित्रा त्रिपिटक में निपुण थीं और सर्वास्तिवाद संप्रदाय के भिक्षु बाला द्वारा प्रशिक्षित थीं। उन्होंने कनिष्क युग के वर्ष 2 में कौशांबी ;प्रवेश संख्या 2948ए नगर संग्रहालयए इलाहाबादद्ध में एक विशाल बोधिसत्व की मूर्ति स्थापित की और भिक्षु बाला के साथ मिलकर कनिष्क युग के वर्ष 3 में सारनाथ और श्रावस्ती के अन्य बोधिसत्व में भी पत्थर की मूर्तियाँ दान कीं। एक अन्य भिक्षुणी धनवती जो बुद्धमित्र की बहन की बेटी थीं। उस ने कनिष्क युग के वर्ष 33 में मथुरा में बुद्धमित्र के सम्मान में एक शिलालेख के साथ बोधिसत्व की मूर्ति स्थापित की थी।

बौद्ध परंपरा के अनुसारए कनिष्क बौद्ध धर्म के एक महान संरक्षक थे। जिन्होंने चौथी बौद्ध परिषद का आयोजन किया जो संभवतः कश्मीर में कुंडलवन विहार में हुई थी। वह प्राचीन भारत के एकमात्र शासक हैं जिन्होंने अपने सिक्कों पर बुद्ध की मूर्ति अंकित की और पुरुषपुर ;पेशावरद्ध में एक भव्य स्तूप का निर्माण कराया।[अपप] कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध खड़े हुए या फिर पद्मासन में बैठे हुए दिखाया गया है। जिसे मानव रूप में बुद्ध की प्रारंभिक मूर्तियों में से एक माना जाता है।[अपपप] कनिष्क के सोने और तांबे के सिक्कों पर बुद्ध की आकृति सामने की ओर खड़ी हुई दिखाई देती है जिसके सिर के चारों ओर एक प्रभामंडल और शरीर के चारों ओर एक प्रभावली ;आभामंडलद्ध है। उनका दाहिना हाथ अभयमुद्रा ;आशीर्वाद मुद्राद्ध में उठा हुआ है जबकि बायां हाथ कमर पर है जो उनके संघाटी ;चोगेद्ध के अंतिम हिस्से को पकड़े हुए है। कनिष्क के कुछ तांबे के सिक्कों पर भविष्य के बुद्धए मैत्रेय को कम ऊँचे आसन पर पद्मासन में बैठे हुए दिखाया है जिनका दाहिना हाथ अभयमुद्रा में उठा हुआ है और बायां हाथ गोद में रखे हुए जलपात्र को पकड़े

हुए है।[पग] इन सिक्कों पर अंकित शब्दावली आमतौर पर सोने के सिक्कों पर ष्बोड्डोष ;बुद्धद्ध और तांबे के सिक्कों पर ष्सकामनो बोड्डोष ;शाक्यमुनि बुद्धद्ध या ष्मेत्रेय बोड्डोष ;मैत्रेय बुद्धद्ध होती है। कनिष्क के ये बुद्ध प्रकार के सिक्के कला के दुर्लभ नमूने हैं।[ग]

कुषाण युग के वैश्विक माहौल और समृद्धि की अभिव्यक्ति कला वस्तुओं और सुंदर मूर्तियों के निर्माण में हुई। मानव रूप में बुद्ध का प्रारंभिक प्रतिनिधित्व कुशाण काल के दौर में शुरू हुआ जब अफगानिस्तान.गांधार और मथुरा दो प्रमुख कलात्मक गतिविधियों के केंद्र के रूप में उभरे। हालांकि इस मुद्दे पर कि किस क्षेत्र में सबसे पहले बुद्ध की मूर्ति का निर्माण हुआए इस पर सभी विद्वान एक मत नहीं है लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना हैं कि दोनों केंद्रों ने स्वतंत्र रूप से बुद्ध की मूर्ति बनाई क्योंकि दोनों में बुद्ध का विशिष्ट रूप दिखाई पड़ता है।[गप] मथुरा बुद्ध को आमतौर पर कपर्दिन प्रकार कहा जाता है जो सिर के शीर्ष पर स्थित कपर्दिन या घुंघराले बालों के जुड़े के कारण है जो एक शंख जैसा दिखता है।[गपप] इसे लगभग हमेशा लाल बलुआ पत्थर से बनाया जाता है जो उस क्षेत्र की अपनी विशेषता है। मथुरा बुद्ध की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि उसके शरीर को ढकने वाला पारदर्शी वस्त्र केवल बाईं कंधे पर लिपटा हुआ है जबकि दाहिना कंधा खुला रहता है।[गपपप] बुद्ध आमतौर पर एक साधारण आसन पर पद्मासन में बैठे होते हैं जिसे अधिकांशतः ;लेकिन सदैव नहींद्ध शेरों द्वारा सहारा दिया जाता है। उनका दाहिना हाथ अभयमुद्रा में तथा क्रॉस की मुद्रा में जो ढके हुए नहीं है इसलिए उनके पैर दृष्टिगोचर हैं। उनकी आँखें चौड़ी व खुली हुई और सीधे दर्शक की ओर देख रही हैं।[गपअ] कलाकार ने उनके सिर के ऊपर अक्सर बोधि ;पीपलद्ध वृक्ष का चित्रण किया है। कभी.कभी मूर्ति के शीर्ष के पास दोनों ओर उड़ते हुए आकृतियाँ दिखाई जाती हैं। कई उदाहरणों में दो और आकृतियाँ जो प्रारंभिक मूर्तियों में स्पष्ट रूप से इंद्र और ब्रह्मा का प्रतिनिधित्व करती हैं उनके बाएँ और दाएँ खड़े होते हैं।[गअ] मथुरा के कलाकारों ने बोधिसत्व की कई मूर्तियाँ का निर्माण किया जिनका संदर्भ निश्चित ही जैन मूर्तियाँ और बुद्ध के जीवन के दृश्यों से प्रेरित है।

क्लासिकल गांधार बुद्ध की विशेषताएँ पूरी तरह से भिन्न हैं। शुरूआत में उपयोग की गई सामग्री मुख्य रूप से उस क्षेत्र का ग्रे शिस्ट ;चकमक पत्थरद्ध था। जिसे धीरे.धीरे 3वीं सदी ईस्वी तक स्टुको ;चूना प्लास्टरद्ध से प्रतिस्थापित कर दिया गया। चेहरे के नैन.नक्शए लहराते बालए सशक्त शरीर और गहरे लयबद्ध सिलवटों वाली पोशाक में ग्रीक.रोमन प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है।[गअप] बुद्ध के दोनों कंधे ए पैरों और तलवों को भी आमतौर पर ढका हुआ दिखाया गया है इसलिए वे अदृश्य रहते हैं। आंखें अक्सर आधी बंद रहती हैं जैसे कि भगवान ध्यानमग्न [गअपप] मूर्ति विभिन्न मुद्राएँ धारण कर सकती है जैसेदृ धर्मचक्र मुद्रा ;उपदेश मुद्राद्धए ध्यान मुद्रा और अभयमुद्रा। कुछ बुद्ध मूर्तियों में मूंछें भी होती हैं तथा बोधि वृक्षए उड़ती दिव्य आकृतियाँ अनुपस्थित होती हैं और इंद्र और ब्रह्मा भी उतने सामान्य रूप से नजर नहीं आते।[गअपपप] गांधार ने भारी अलंकृत बोधिसत्व की मूर्तियाँए बुद्ध के जीवन के कथा शिल्प और जातक कथाओं की पत्थर पर चित्रांकित मूर्तियाँ भी तैयार कींए जो इस्तेमाल विभिन्न आकार के स्तूपों को सजाने के लिए लिया गया।ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ बौद्ध विद्वानों और मिशनरियों ने बौद्ध धर्म का बौद्धिक प्रसार किया। वहीं मथुरा और गांधार के कलाकारों ने मानव रूप में बुद्ध को प्रिय बनाकर जनमानस में बुद्ध चेतना का निर्माण किया।[गपग]

कुषाण काल से संबंधित पुरातात्विक स्थल मध्य एशियाए अफगानिस्तानए पाकिस्तान और उत्तर भारत में बौद्ध संप्रदायों की लोकप्रियता के बारे में बहुत कुछ बताते हैं। उस समय की राजनीतिक संरक्षण और आर्थिक समृद्धि ने धार्मिक भवन निर्माण गतिविधियों को बढ़ावा दिया। बेक्ट्रीया में कुषाणों का प्रमुख शहर बाल्ख ;उत्तर अफगानिस्तानद्ध था जो न केवल कुषाण राजनीति का केंद्र था बल्कि एक बौद्ध नगर भी था। ह्वेन त्सांग के अनुसार दृ नवसंग्राम का सबसे बड़ा मठ बाल्ख के बाहर स्थित था। टर्मेज ;उज़्बेकिस्तान मेंद्ध कुषाण बेक्ट्रीया का एक और पुराना शहर था जहां कराटेप के टीले और चिंगिज़.टेपे के पास दो बड़े मठ उपस्थित थे।[गग]

जलालाबाद के निकट निंगरहार प्रांत में स्थित हड्डा नामक स्थान जो कि कुषाण काल के बौद्ध कला के संदर्भ में सबसे समृद्ध पुरातात्विक स्थलों में से एक है। यह लगभग 15 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले स्तूपोंए मठों और गुफाओं का विस्तृत क्षेत्र है। हड्डा

परिसर में प्रसिद्ध स्थल जैसे टेपे शोटुरए टेपे काफिरीहाए टेपे कालानए टेपे ज़रगरानए बाग गाईए गर नौ आदि शामिल हैं। 1923 से 1928 और 1930.33 के बीच अफगानिस्तान में फ्रेंच पुरातात्विक मिशन द्वारा की गई खुदाई में 1000 से अधिक स्तूपों की पहचान की गई साथ ही गांधारन शैली की बड़ी मात्रा में स्टुको मूर्तियाँए चूना पत्थर और शिस्ट की उत्कृष्ठ मूर्तियाँ और बौद्ध भित्तिचित्र भी प्राप्त हुए हैं।[गगप] टेपे कालान ;ज्ंचम ।संदद्ध [गगपप]और उसके आसपास से 23ए000 से अधिक चूना पत्थर और स्टुको सिर बरामद किए गए जिनमें बुद्धए बोधिसत्वए राक्षसए दानदाताए भिक्षुए हेलमेटधारी सैनिक और विभिन्न समूहों के लोग शामिल थे। 1965 से 1973 के बीच अफगान पुरातत्व विभाग द्वारा टेपे शोटुर ;ज्ंचम ीवजनतद्धकी खुदाई से एक बौद्ध स्तूप.मठ परिसर का पता चला[गगपपप] जिसमें चैपलए सजावटी स्तूपए मिट्टी की मूर्तियाँए उत्कीर्ण मूर्तियाँए भित्तिचित्रए बड़ी संख्या में सिक्केए कई सोने.चांदी और स्टीटाइट से बने अवशेष पात्र और एक अनूठा श्मछली वाला बरामदाश् शामिल था। हड्डा को कई बस्तियों से घेरा गया था जो सभी स्तूप.मठ परिसर प्रतीत होते हैं। जैसे घुंडा चश्माए चाखिल.ए.घुंडीए बाराबादए कुहना देहए क़ला.ए.शाहीए देह.ए.रहमानए शलातकए बिमारनए फिलखाना और अहिन पोश टेपे। लघमान प्रांत में स्थित बिमारन एक समृद्ध कुषाण स्थल है जिसमें चार प्रमुख स्तूपए खरोष्ठी शिलालेखए सिक्केए सोने के आभूषणए माणिक से जड़े सोने के अवशेष पात्र और छह कृत्रिम गुफाओं का एक जटिल समूह शामिल है। [गगपअ]अवशेष पात्र पर बुद्ध की दो अलग. अलग और तीन.तीन आकृतियाँ अंकित हैं दृ एक खड़ा बुद्धए जिसके दोनों ओर इंद्र और ब्रह्मा देवता दिखाये गए हैं। इसे बुद्ध की प्रारंभिक मूर्ति के उदाहरणों में से एक माना जाता है।[गगअ]

अफगानिस्तान का सबसे उल्लेखनीय बौद्ध अवशेष बामियान की दो विशाल बुद्ध प्रतिमाएँ हैं।[गगअप] जिनकी ऊंचाई क्रमशः 55 मीटर और 38 मीटर थीए और इन्हें गहरी दीवारों में तराशा गया हैं। यह स्थल मध्य एशियाई रेशम मार्ग के पश्चिमी छोर पर काबुल से लगभग 250 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित हैं जो व्यापारियो के लिए एक स्वाभाविक रूप से रुकने का स्थान हुआ करता था और बौद्ध भक्तों को मंदिर और प्रतिमाएँ तराशने के लिए प्रेरित करता था। दो विशाल बुद्ध प्रतिमाओं और आस.पास हजारों चट्टानों में तराशी गई गुफाओं के साथ बामियानबाद के कुषाण काल के दौरान एक विशाल मठ के रूप में विकसित हुआ होगा।

होमे काला के स्थल पर एक कण्ठ की तीन दीवारों में उकेरे गए मठ सहित कई रॉक.कट गुफाएं देखी गई हैं। ये विभिन्न स्तरों पर स्थित बौद्ध मठ कक्ष हैं जिनमें तीनों दीवारों के साथ एक गलियारा है।[गगअपप] फिल.खाना की गुफाओं में भी इसी तरह की योजना है जहां एक ही स्तर पर कई शैल एक ही गलियारे से जुड़ी हुई हैं जिन्हें चट्टान में उकेरा गया है। केण निशिकावा और एसण मिज़ुनो जिन्होंने फिल.खाना गुफाओं का अध्ययन किया तब इन्होंने ने गुफा संख्या 28 में खोजे गए खरोष्ठी शिलालेख के आधार पर इस परिसर को श्महान कुषाणोंश् की अवधि का बताया है।[गगअपपप] उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि फिल.खाना गुफाएं अफगानिस्तान की सबसे शुरुआती बौद्ध गुफाओं में से एक हैं। अफगानिस्तान से कई अन्य रॉक.कट मठों की सूचना मिली है जिनमें से हैबक और हजार सुम की गुफाएं उल्लेखनीय हैं।[गगपग]

चीनी स्रोत हमें बताते हैं कि पुरुषपुर ;आधुनिक पेशावरद्ध कुषाणों की राजधानियों में से एक था। फाहियान के अनुसार पुरुषपुर कनिष्क द्वारा निर्मित शानदार स्तूप और बुद्ध के भिक्षापात्र के लिए प्रसिद्ध था जिसे पाटलिपुत्र से कनिष्क द्वारा लाया गया था।[गगग] ह्वेन त्सांग एक भव्य स्तूप के निर्माण को भी संदर्भित करता हैए जिसमें बुद्ध के अवशेष और पुरुषपुर में बुद्ध के पात्र की मीनार शामिल है।[गगगप] पेशावर शहर के पास शाह जी की ढेरी के नाम से प्रसिद्ध दो बड़े टीलों की पहचान कनिष्क के स्तूप और एक मठ के रुप मे हुई है।[गगगपप] स्तूप का मुख्य भाग दीवारों से बना था जो केंद्र से निकलती थी। जमीनी स्तर से नीचे स्तूप के केंद्र में एक खुदा हुआ बेलनाकार ताबूत और तांबे की मिश्र धातु ;7ण75 इंच ऊंचा और 5 इंच व्यासद्ध का ढक्कन था। इसमें ढक्कन के केंद्र में बैठे बुद्ध की आकृति है तथा ब्रह्मा और इंद्र की दो आकृतियाँ क्रमशः बाईं और दाईं ओर हाथ जोड़कर खड़े हैं।

पेशावर के पास चनका.ढेरी के पूर्व में पहाड़ की ढलान पर मेखसंदा स्थल की खुदाई सबसे पहले हुई।.गगगपपप क्योटो विश्वविद्यालय पुरातत्व मिशन ने पत्थर की कहीं इमारतों की खुदाई की जिसमें एक आंगन के केंद्र में एक मुख्य स्तूपए मुख्य रिज पर खड़ा और इसके चारों ओर कई मन्नत स्तूप शामिल हैं।

पोटवार पठार में माणिक्याला टोपे की खुदाई पहली बार 1830 में महाराजा रणजीत सिंह की सेवा में एक सेना अधिकारी जनरल वेंचुरा द्वारा की गई थी। इसके बाद 1834 में जनरल कोर्ट और फिर 1863.64 में अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा जांच की गई थी। इसके व्यापक अवशेष लगभग छह वर्ग मील के क्षेत्र में फैले हुआ हैं। माणिक्याला टोपे नंबर 1 एक 92 फीट ऊंचा विशाल स्तूप है जिसमें कन्नौज के यशोवर्मन के एक सिक्के के साथ मिश्रित कनिष्क और हुविष्क के सोने और तांबे के सिक्कों से युक्त एक अवशेष मिला है।.गगगपअ इन सिक्कों के साथ दो खरोष्ठी शिलालेख पाए गए। जिसमें एक बेलनाकार कांस्य ताबूत के ढक्कन पर और दूसरा एक सादे चांदी के डिस्क पर। स्तूप का मुख्य शरीर 127 फीटए 9 इंच व्यास का एक ठोस गोलार्ध है। ऊपरी और निचले प्लिंथ को कोरिंथियन पायलटों से सजाया गया है।

तक्षशिला के आसपास के क्षेत्र में बड़ी संख्या में बौद्ध स्तूप और मठ भी खोजे गए हैं। इनमें धर्म.राजिका स्तूपए कलावन में समघरामाए गिरि का स्तूप.सह.मठ परिसरए कुणाल और घई के स्तूपए भामाला के समघर्रामए लालचकए पिप्पलाए मोहराए मोराडूए जौलियानए बादलपुर और भल्लार में स्तूप और मठ और जंदियाल में आयनिक मंदिर शामिल हैं। इनमें से अधिकांश धार्मिक इमारतों की स्थापना तक्षशिला के कुषाण शहर सिरसुख की स्थापना के बाद की गई थी।.गगगअ इस क्षेत्र में प्लास्टर अलंकरण का सबसे अच्छा उदाहरण जौलियन में स्तूप और मठ के रुप में मिलता है।

कुषाण शासन के तहत कश्मीर में बौद्ध धर्म बहुत तेजी से बढ़ा। जब कश्मीर सर्वास्तिवाद स्कूल एक प्रमुख केंद्र बन गया। ह्वेन त्सांग के अनुसार चौथी बौद्ध परिषद कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के कुंडलवन विहार में आयोजित की गई थी। कश्मीर की घाटी में शालीमार उद्यान से दो मील की दूरी पर हरवान में एक स्तूप और एक मठ के रूप में बौद्ध कला और वास्तुकला के अवशेष देखे गए।.गगगअप स्थल में तीन छतें शामिल हैंए जिसमें निचली छत कुषाण काल के एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल का प्रतिनिधित्व करती हैए जबकि एक अप्साइडल स्तूप या मंदिर सबसे ऊंची छत पर खड़ा है। हरवान की समग्र योजना सुर्ख कोटल ;अफगानिस्तानद्ध में अग्नि मंदिर में दिखाई पड़ती है जहां मंदिर उच्चतम स्तर पर स्थित मुख्य मंदिर के चारों ओर एक आंगन के साथ एक सीढ़ीदार संरचना है। दोनों में मूल रूप से प्रत्येक छत के केंद्र के माध्यम से जाने वाली एक सीढ़ी थी। हरवान में चिनाई शैली अपनी विकसित रुप में मालूम पड़ती हैं।.गगगअपप अप्साइडल स्तूप के प्रांगण के फुटपाथ पर श्डायपर पेबल शैलीश से जुड़ी हुई टाइलें मिलीं जो सामने वर्गाकार और पीछे की ओर गोलाकार थीं। मंदिर आवास के पीछे एक परिपत्र गर्भगृह के साथ एक विशाल आयताकार पूर्व.कक्ष शामिल था।

जम्मू जिले के अखनूर क्षेत्र में 1999.2001 के दौरान बीण्आरण मणि के निर्देशन में अंबरन स्थल की खुदाई की गई। जिसमें कुषाण काल में स्थापित बौद्ध मठ प्राप्त हुए।.गगगअपपप कुषाण चरण के साथ पहचाने जाने वाले अवधि प्प की खुदाई के दौरान एक मुख्य स्तूप ;6 × 6 मीटर आधारद्धए एक और बड़ा स्तूप ;10 × 10 मीटर वर्ग आधारद्धए कई मन्नत स्तूपए एक मठ की दीवारें और एक अन्य लंबी संरचना संभवतः स्तूप से जुड़ी एक मंच का ढांचा प्राप्त हुआ।.गगगपग इसके पूर्वी हिस्से में स्तूप से जुड़ा एक आयताकार ईंट.पक्का मंच पाया गयाए जिस पर कुछ लैंप खोजे गए थे। बीण्आरण मणि के अनुसारए इस बौद्ध प्रतिष्ठान की निर्माण योजना धर्मराजिकाए कलवान और जंडियाल के तक्षशिला स्तूपों के समान है।.गस मुख्य स्तूप में सोने की तीस गोलाकार पतली चादरेंए चांदी की दो गोलाकार रिमेड पतली चादरेंए मोती के सौ पचास सूक्ष्म मोतीए बारह बेलनाकार मूंगा मोतीए दो धातु के सूक्ष्म मोतीए एक अंडाकार आकार का चांदी का ताबूतए एक गोलाकार सोने का ताबूतए सोने की चार पूर्ण और छह टूटी हुई गोलाकार पतली चादरें थीं। तीन जड़े हुए तांबे के

सिक्केए जिनमें से दो संभवतः कुषाण के गुद्दे हैं और एक नीलम का मनका है।[गसप] इस स्थल पर गांधार कला के टेराकोटा प्रमुखों के साथ घनिष्ठ समानता के साथ बौद्ध टेराकोटा के सिर भी मिले।

भारतीय पंजाब के लुधियाना जिले के संघोल में खुदाई में दो बौद्ध स्तूपोंए मठ परिसरोंए एक महलनुमा परिसरए एक सभा हॉल और अन्य आधिकारिक भवनों के अवशेष मिले हैं जो 100 ईसा पूर्व दृ 300 ईस्वी तक की अवधि प्ट से संबधित हैं। मुख्य बस्ती से दूर परिधीय क्षेत्र में दो बौद्ध स्तूपए एक मठ परिसरए मन्नत स्तूप और अन्य बड़े पत्थर की संरचनाएं भी सामने आयी हैं। दोनों स्तूपों के आंतरिक भाग की स्थापत्य योजना धर्मचक्र या पवित्र चक्र की तरह है।[गसपप] बड़ा स्तूप एक बेलनाकार स्मारक है जो एक उभरे हुए चौकोर मंच पर बनाया गया है जिसके स्थापत्य में ईंट की चिनाई के तीन संकेंद्रित छल्ले हैं जिसमें बीच के स्थान नियमित अंतराल पर ईंट को विकीर्ण करके विभाजित किया गया है यानी 12ए 24 और 32 पहले आंतरिक सर्कल से तीसरे सबसे बाहरी सर्कल तक आगे बढ़ते हैं। स्तूप के नीचे से राख और जली हुई हड्डियों से भरा एक पत्थर का ताबूत मिला जिसमें एक खरोष्ठी कथा उपासक अयभद्रास पढ़ रही थी।[गसपपप] स्तूप के पूर्व में एक पक्का रास्ता देखा जाता है जिस पर कई मन्नत स्तूप देखे जाते हैं। स्तूप के उत्तर में 1ण्35 × 1ण्05 मीटर मापने वाले दो आयताकार मंच और कई अन्य संरचनाएं हैं जो मंदिर से जुड़े प्रवेश द्वार के साथ मठवासी परिसर का गठन करती हैं। बड़े स्तूप के उत्तर.पूर्व की ओर समान धर्मचक्र पैटर्न के आधार पर छोटे आयाम का एक और स्तूप खोजा गया था। इनके अलावाए मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट से संबंधित महीन बनावट वाले लाल बलुआ पत्थर की महान सुंदरता की कई कुषाण मूर्तियांए मूर्तिकला रेलिंगए खंभेए क्रॉस.बारए कोपिंग पत्थर आदि स्तूप के आसपास की वास्तुशिल्प परियोजना का एक हिस्सा हैं।[गसपअ] वे बुद्ध के सिरोंए बुद्ध मूर्तियोंए बोधिसत्वोंए बौद्ध भिक्षुओंए धर्मचक्र आदि को प्रमुखता से चित्रित करते हैं। साथ ही इस स्थान से रेलिंग खंभों के 117 टुकड़े खोजे गए।

हरियाणा के यमुनानगर जिले के सुध में अलेक्जेंडर कनिंघम ने प्राचीन शहर श्रुघना को खोजा था।[गसअ] सुघ के दक्षिण.पश्चिम में 1ण्6 किलोमीटर की दूरी पर कुषाण काल के मठ के साथ पहचाने जाने वाले एक जले हुए ईंट के ढांचे के अवशेष खोदे गए हैं। यह एक आयताकार अहाता है जो लगभग 130 × 70 मीटर की दूरी पर है जिसमें 75 सेंटीमीटर चौड़ाई और 6 मीटर ऊंचाई की विशाल दीवारें हैं।[गसअप] यमुनानगर जिले के आदि बद्री में एक स्तूप.सह.मठ परिसर की खोज की गई थी जिसमें संरचनात्मक गतिविधि के दो चरण दिखाई देते हैं। करनाल जिले के असंध से एक ईंट के स्तूप के अवशेष देखे गए हैं। विशाल संरचना 25 मीटर से अधिक की ऊंचाई तक बढ़ जाती है और इसमें एक लम्बी गुंबद के साथ एक गोलाकार ड्रम होता है। गोलाकार दीवार के 44 भागों को देखा गया है।[गसअपप] कुषाण काल के बौद्ध स्तूप हथीनए भूना और भदास में भी मौजूद रहे होंगे।[गसअपपप]

यह बहुत संभावना है कि मथुरा पूर्व में कुषाण साम्राज्य का मुख्यालय था। अलेक्जेंडर कनिंघम ने मथुरा और उसके आसपास कई बौद्ध स्थलों की पहचान कि जैसे उपगुप्त विहारए हुविष्का विहार और कटरा में कुंड.सुख विहार और जेल टीला।[गसपग] शिलालेखों से मथुरा में कई विहारों के अस्तित्व का भी पता चलता है जैसे बुद्धरक्षिता विहारए चुटका विहारए श्रीविहारए सुवर्णकार विहारए धर्महस्तिका विहारए कस्तिकिया विहार और अन्योर में स्थित विहार। इन खोजों से साबित होता है कि मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट का केंद्र होने के अलावाए मथुरा कुषाण काल के दौरान एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र भी था। उत्तर प्रदेश में कई अन्य स्थलों से बौद्ध प्रतिष्ठानों के अवशेष मिले हैं। फर्रुखाबाद जिले में संकिसा की खुदाई से मौर्य से गुप्त काल के एक मठ के साक्ष्य मिले हैं।[स] साहेत.महेत के जुड़वां नाम के साथ श्रावस्ती की स्थल प्रसिद्ध बौद्ध मठ का प्रतिनिधित्व करने वाले साहेत के साथ अवशेषों के दो समूहों को दर्शाती है दृ जेतवन विहार और महेत दृ प्राचीन शहर श्रावस्ती के खंडहर।[सप] अच्छी तरह से जली हुई ईंटों का एक मठवासी परिसर 17 कमरों और पके हुए ईंटों के एक व्यापक फर्श के साथ देखने को मिलता हैं जो एक सार्वजनिक हॉल के उद्देश्य से निर्मित किया गया होगा।[सपप] वाराणसी के आसपास के क्षेत्र में सारनाथ के बौद्ध धार्मिक केंद्र जिसकी खोज ज्ञण्ड श्रीवास्तव की थी।[सपपप] उस में कनिष्क के शासनकाल का एक शिलालेख कुषाण काल के मठवासी अवशेष और हुविष्क का एक तांबे का सिक्का शामिल है।[सपअ] कनिष्क के वर्ष

3 में दिनांकित शिलालेखए एक उत्कीर्ण बोधिसत्व प्रतिमा और एक पद के साथ एक छतरी के समर्पण के रुप में सामने आता हैं। फ्रायर बाला द्के महाक्षत्रप खरपल्लन और क्षत्रप वनस्पारा के साथ वाराणसी में स्थित हैं। यह शिलालेख पर्याप्त रूप से साबित करता है कि सारनाथ कुषाण काल के दौरान एक धार्मिक शहर के रूप में फला.फूला। ये समृद्ध पुरातात्विक अवशेष कुषाण शासन और बौद्ध कला और बौद्ध धर्म के महायान रूप के बीच घनिष्ठ संबंध की ओर इशारा करते हुए बताते हैं कि राजनीतिक आधिपत्यए व्यापार और बौद्ध विचारधारा कुषाण साम्राज्य में एक साथ चला।

गुप्त और गुप्तोत्तर काल के दौरान एक आम धारणा थी कि ईश्वरवादी ब्राह्मणवादी पंथों के उद्भव के कारण भारत में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता घट रही थी। लेकिन फा.हशियन ;399.414 सीईद्ध द्वारा एकत्रित की गई जानकारी से पता चलता हैं ;चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत में प्रमुख बौद्ध केंद्रों का दौरा किया थाद्ध हमें इस दृष्टिकोण का पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। फाहियान ने गांधारए बन्नूए कन्नौज और कौशाम्बी में हीनयान संप्रदाय की व्यापकता का उल्लेख किया। उन्होंने यह भी देखा कि बौद्ध धर्म कि महायान और हीनयान दोनों शाखा अफगानिस्तानए पंजाबए मथुरा और पाटलिपुत्र में लोकप्रिय थी हालांकि खोतान में केवल महायान भिक्षु मौजूद थी। आसंग और वसुबंधु ;4 वीं शताब्दी के अंतः 5 वीं शताब्दी की शुरुआत मेंद्ध और बुद्धपालिता ;6 वीं शताब्दीद्धए भावविवेक ;6 वीं शताब्दीद्ध और चंद्रकीर्ति ;7 वीं शताब्दीद्ध जैसे मध्यमाका विचारकों जैसे कई प्रमुख योगचारिन विद्वानों ने अपने सिद्धांतों का प्रचार किया।

गुप्त काल और बाद की अवधि के दौरान मथुराए सारनाथए कौशाम्बीए बोधगया और नालंदा के कुछ प्रमुख बौद्ध केंद्रों में कुछ मठवासी संरचनाओं के आकारए पैमाने और अलंकरण में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा सकती है। इस समय के अन्य समृद्ध बौद्ध केंद्रों में रत्नागिरीए उदयगिरिए अजंताए एलोराए अमरावतीए बागए सांचीए वल्लभीए देवनीमोरी आदि शामिल हैं। गुप्त शासकों ने नालंदा के शैक्षिक केंद्र को संरक्षण दियाए जबकि अजंता और एलोरा वाकाटक शासन के तहत फले.फूले। नागार्जुनकोंडा और कांचीपुरम में भी बौद्ध मठ फले.फूले। फाहियान ने बोधिसत्वों को समर्पित स्तूपों की संख्या और सारिपुत्रए महामोगलानाए आनंद और अन्य जैसे विभिन्न भिक्षुओं का भी उल्लेख किया है। इनमें से कुछ स्तूप मथुरा में स्थित थे जैसे सारिपुत्रए मुद्गलपुत्रए पूर्ण मैत्रायणीपुत्रए उपालीए आनंद और राहुल के अवशेष स्तूप। लेकिन चीनी तीर्थयात्री कुछ ऐसे मठों की भी बात करते है जो गया और कपिलवस्तु की तरह वीरान थे।

बौद्ध प्रथाओं पर भक्ति के विचारों के प्रभाव को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है विशेष रूप से पूजा के संस्कारों की दृष्टि से। फाहियान ने खोतान में रथों पर मूर्तियों के जुलूस से जुड़े एक समारोह का उल्लेख किया है जो दो सप्ताह तक चलता था और पाटलिपुत्र जहां यह केवल दो दिनों तक चलता था। स्वर्गीय बुद्ध अमिताभ ;अनंत कांतिद्धए स्वर्गीय बोधिसत्व मैत्रेय ;दयालुद्धए अवलोकितेश्वर ;करुणा का अवतारद्ध और मंजुश्री ;ज्ञान से जुड़ेद्ध की पूजा भिक्षुओं और आम लोगों के बीच प्रचलित । देवी तारा करुणा की स्त्री अवतार थी। कई बुद्धों और बोधिसत्वों ने अपनी विशिष्ट आइकनोग्राफी के साथ बौद्ध केंद्रों जैसे अजंताए बागए कन्हेरीए सांची आदि की मूर्तियों और चित्रों में प्रतिनिधित्व पाया। मथुरा बौद्ध कला का एक प्रमुख केंद्र बना रहा जबकि सारनाथ को उनकी सुंदरता के कारण प्राचीन भारत की कला के महानतम कार्यों में से एक माना जाता है।

इस अवधि के दौरान गांधार में जलियनए चारसदा और तक्षशिला सहित कई स्तूपों और रॉक.कट चैत्यों और विहारों का निर्माण किया गया था। स्तूप वास्तुकला के प्रमुख उदाहरणों में से एक सारनाथ का धामेक स्तूप हैए जिसका व्यास 28ण्3 मीटर और ऊंचाई 34 मीटर है। बुद्ध मूर्तियों के लिए कार्डिनल बिंदुओं पर चार निचे के साथ यह ड्रम जैसा स्तूपए एक बहुत बड़े और ऊंचे आधार पर बनाया गया है। स्तूप का निचला हिस्सा ज्यामितीय पुष्प डिजाइनए मानव आकृतियों और पक्षियों के साथ उत्कृष्ट नक्काशीदार पत्थरों से सजाया गया हैए जबकि ऊपरी हिस्से में ईंट के काम का पता चलता है। चैत्य और विहारों के रूप में रॉक कट वास्तुकला अजंता में एक उच्च

वॉटरमार्क तक पहुंच गईए जहां वाकाटक के शासन के दौरान कुल 28 गुफाओं में से 23 को उकेरा गया था। गुफा संख्या 19 और 26 दिनांक 5 वीं और 6 वीं शताब्दी सीई समृद्ध मूर्तिकला सजावट के साथ अत्यधिक सुशोभित चैत्य हैं जबकि बाकी गुफाएं विहार हैं।

नालंदा जैसे कुछ बौद्ध मठों ने गुप्त और गुप्त काल के बाद शैक्षिक केंद्रों के रूप में ख्याति प्राप्त की। नालंदा का साहित्यिक संदर्भ ईसा पूर्व 6 वीं .5 वीं शताब्दी का है लेकिन बरगांव ;नालंदा मठ का स्थलद्ध की खुदाई से पता चला कि अवशेष गुप्त.पूर्व काल से शुरू होते हैं। गुप्त राजा कुमारगुप्त और बुधगुप्त ने नालंदा में मठों का निर्माण किया हो सकता हैए जिन्हें हर्षवर्धन और पाल के शासनकाल के दौरान गुप्त काल के बाद के समय में संरक्षण प्राप्त होता रहा। फाहियान ने नालंदा का उल्लेख नहीं किया हैए ह्वेनसांग ;629 .645 ईण्द्ध ने इस शिक्षा केंद्र में योगचार सिद्धांत का अध्ययन करने में पांच साल बिताए। पुष्यभूति वंश के हर्षवर्धन को कन्नौज में एक महान सभा बुलाने का श्रेय दिया जाता हैए जहाँ ह्वेनसांग ने अन्य विद्वानों के साथ महायान सिद्धांत पर प्रवचन दिया। ह्वेनसांग ने मगध क्षेत्र में अन्य समृद्ध मठों का भी उल्लेख किया हैए जैसे बोधगया और तिलोदका के साथ.साथ कुछ तत्कालीन केंद्र जो खंडहर अवस्था में थे। रक्तामृत्तिका महाविहार कर्णसुवर्ण ;चिरुतिए मुर्शिदाबाद के पासद्धए शशांक गौड़ की राजधानी उन्होंने उत्तर बंगाल के पुंद्रवर्धन क्षेत्र में वासवविहार और बंगाल डेल्टा में समता क्षेत्र में कुछ मठों का भी उल्लेख किया है। यिजिंगए 7 वीं शताब्दी के एक अन्य चीनी विद्वान नालंदा के मठ में दस साल तक रहे और बोधगया और तिलोदका के मठ का दौरा कियाए जिसे उन्होंने 1ए000 भिक्षुओं के आवास के रूप में वर्णित किया है।

बौद्ध स्थलों के पुरातात्विक अवशेषों के साथ.साथ साहित्यिक स्रोतों का उपरोक्त सर्वेक्षण बौद्ध विचारधारा के प्रारंभिक प्रसार और भारतीय उपमहाद्वीप के प्रारंभिक इतिहास में इसकी अपील की गवाही देता है। अशोक मौर्य और कनिष्क के विशाल व्यक्तित्वों के तहत विस्तार के प्रारंभिक चरण के बादए बौद्ध धर्म मध्य एशिया और सिल्क रोड के सबसे लोकप्रिय धर्म के रूप में उभरा। गुप्त और गुप्त काल के बाद उत्तर.पश्चिमी भारत से पूर्वी भारत तक बौद्ध संरचनाओं के पुरातात्विक क्षितिज में एक बदलाव देखा जा सकता है। फिर भी बौद्ध धर्म भारत का एक प्रमुख धर्म बना रहा और बाद की शताब्दियों में अन्य एशियाई देशों में भी इसका विस्तार बहुत तेज़ी से हुआ।

ACKNOWLEDGEMENTS

Authors are thankful to the healthcare practitioners working in GMC, Srinagar who helped directly or indirectly in the collection of data during the field work.

CONFLICT OF INTEREST

The authors declare no conflict of interest between them.

REFERENCES

D.N. Jha, Ancient India, Delhi, 2015 pp.71

U. Singh, A History of Ancient and Early Medieval India, Delhi, 2008, p.362
Ibid. p.363
Ibid. p.363
S. Shrava, Dated Kushana Inscriptions, Delhi, 1993, p.193
Ibid. p. 487-88

P.B. Desai (ed.), Some Problems Concerning the Kushans,Dharwar, 1971

S. Sharma,Gold Coins of Imperial Kushanas and their Successors,BHU,Varanasi, 1999, p 35

Joe Cribb,'The Origin of the Buddha Image – The Numismatic Evidence', *South Asian Archaeology*, London 1981, pp.231-243

ibid p.236
J.E. Van Lohuizen-de Leeuw, 'New evidence with regard to the origin of the Buddha image', *SAA*, 1979, pp.377-400
J.E. Van Lohuizen-de Leeuw, 'New evidence with regard to the origin of the Buddha image', *SAA*, 1979, pp.377-400
ibid p.382
ibidhttps://dx.doi.org/10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.2464
ibid p.382-23
ibid

U. Singh, 2008, *op. cit.,* pp.462-63

J.E. Van Lohuizen-de Leeuw, 'New evidence with regard to the origin of the Buddha image', *SAA*, 1979, pp. 383
ibid p
एस.एन. चोपड़ा, अध्यक्षीय संबोधन, पंजाब इतिहास कांग्रेस, 18वां सत्र, 1983, पृ. 19-20

B. Stavisky, 'The Study of Kushana Central Asia', in A.L. Basham (ed.), *Papers on the Date of Kanishka*, Leiden, 1968, p.204
V.C. Srivastava, Historical Probings in Afghanistan, Varanasi, 1997, pp.65-66, 76
Afghanistan, XXI (1-2), 1968; XXII (2, 3, 4), 1969
Ibid., XXIV (2-3), 1971; XXVI, (4), 1974
Ibid.
U. Singh, 2008, *op. cit.,* pp 462
R. Sengupta, *The Buddha in Afghanistan*, ASI, New Delhi, pp.3-5

Verardi, 'The Buddhist Cave Complex of Homay Qala', *South Asian Archaeology*, 1975, pp.119-126
एस. मिज़ुनो (संपादक), हज़ार सुम और फ़िल-खाना, क्योटो, 1967, पृष्ठ 77
1975, 2008, *op. cit.,* pp

James Legge, *The travels of Fa-hsien*, Delhi (reprint), 1971, Ch. X, pp.33-35

S. Beal, The Life of Hsuang-Tsang by Shaman Hwui Li, Delhi, 1973, p.63

D.K. Chakrabarti, *The Oxford Companion to Indian Archaeology: The Archaeological Foundation of Ancient India*, OUP, Delhi, 2006, p.39

Ibid
PA, Cr. no. 7, 1970-71, p. 9
J. Marshal, Taxila, I, Re-print 1975, p 5
आर.सी. काक, कश्मीर के प्राचीन स्मारक, नई दिल्ली, 1971 (पुनर्मुद्रण), पृष्ठ 105
B.R. Mani, 'Concentric Circles: Kushan Structural Riddle in Kashmir', *Puratattva*, No. 38, 2007-08, p.218
Indian Archaeology, A Review IAR, 1999-2000, p 52-63; 2000-2001, p 47-68
Ibid
IAR, 1999-2000, p. 59
IAR, 1999-2000, p. 60
S.K. Vashisth, 'Buddhist Remains at Sanghol', *Punjab History Conference*, 37th Session, 2005, pp.116-118.

Ibid p.116-118

IAR, 1968-69, p. 25

Archaeological Survey Report (ASR), Vol II, 1871, p. 226-27
ए. केसारवानी और एस.के. वशिष्ठ, 'हरियाणा में बौद्ध स्तूप: नए साक्ष्य', पुरातत्व, खंड 33, 2002-03, पृष्ठ 87-93
वही, पृष्ठ 90

वही, पृष्ठ 87-93
ASR, Vol I, p.232-41
IAR, 1996-97,p.139-142
K.K Sinha, Excavation at Shravasti (1959),Varanasi, 1967
ASR, 1919-20, p.26